नाम	Gopi Nath
लिंग	पुरूष
जन्म तिथि	16-10-1984 (मंगलवार)
जन्म समय (मानक)	18:33:26 (इष्टकाल 30:22:34 घटी)
जन्म स्थान	Delhi
अक्षांश	028:39 उत्तर
रेखांश	077:13 पूर्व
देश/विभाग	India
मानक रेखांश	082:30 पूर्व
स्थानिक समय संस्कार	-00:21:08
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	+00:00:00
स्थानिक जन्म समय	18:12:18
साम्पातिक काल	19:53:12
अयनांश (एन.सी.लाहिरी)	23:38:39
सूर्योदय (स्थानिक)	06:03:16
सूर्यास्त (स्थानिक)	17:23:40
अयन	दक्षिण
गोल	दक्षिण
ऋतु	शरद
तिथि	सप्तमी
पक्ष	कृष्ण
शालिवाहन शक् सम्वत्	1905-1906
विक्रम सम्वत्	2040-2041
लग्न-लग्नाधिपति	मेष-मंगल
राशि	मिथुन
राशी स्वामी	बुध
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	तुला
नक्षत्र	आर्द्रा
नक्षत्रस्वामी	राहु
चरण	3
योग	परिघा
वर्ण	शूद्र
हंसक	वायु
वश्य	मानव
योनि	स्वान
गण	मनुष्य
नाड़ी	आद्य
वर्ग	मार्जार
युंज	मध्य
अक्षर	घ
दशा का भोग्यकाल (विंशोत्तरी दशा(महादशा))	राहु 8 वर्ष 11 माह 22 दिन

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

ग्रह स्पष्ट

ग्रह	चाल	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी
लग्न		15:07:09	मेष	भरणी	1	मंगल	शुक्र
सूर्य		29:43:07	कन्या	चित्रा	2	बुध	मंगल
चन्द्र		13:21:03	मिथुन	आर्द्रा	3	बुध	राहु
मंगल	मार्गी	14:16:03	धनु	पूर्व आषाढा	1	गुरू	शुक्र
बुध	मार्गी	03:46:34	तुला	चित्रा	4	शुक्र	मंगल
गुरू	मार्गी	12:53:26	धनु	मूल	4	गुरू	केतु
शुक्र	मार्गी	01:52:27	वृश्चिक	विशाखा	4	मंगल	गुरू
शनि	मार्गी	22:26:11	तुला	विशाखा	1	शुक्र	गुरू
राहु	वक्री	05:33:09	वृष	कृतिका	3	शुक्र	सूर्य
केतु	वक्री	05:33:09	वृश्चिक	अनुराधा	1	मंगल	शनि
यूरेनस	मार्गी	17:22:26	वृश्चिक	ज्येष्ठा	1	मंगल	बुध
नेपट्यून	मार्गी	05:20:40	धनु	मूल	2	गुरू	केतु
प्लूटो	मार्गी	08:03:28	तुला	स्वाति	1	शुक्र	राहु

लग्न कुंडली

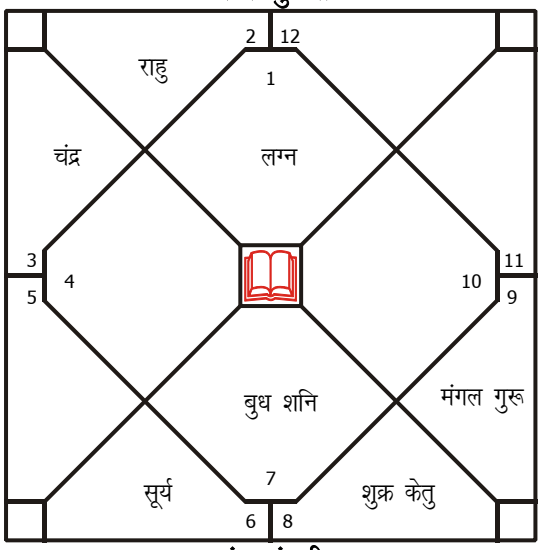

नवमांश

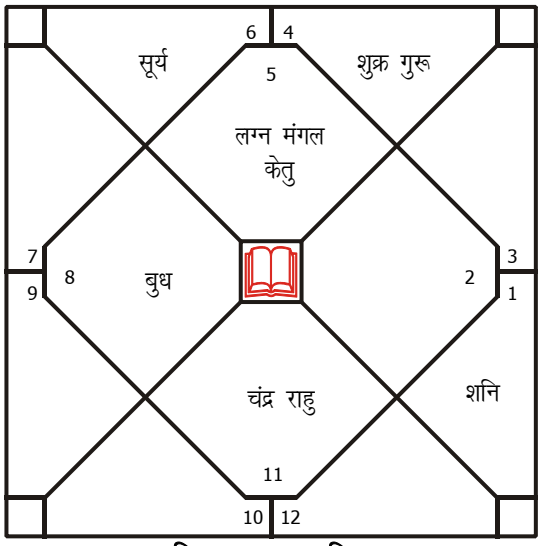

चंद्र कुंडली

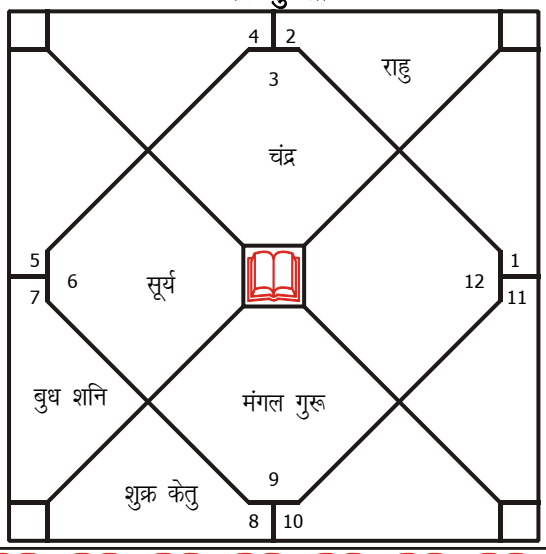

निरयण भाव चलित

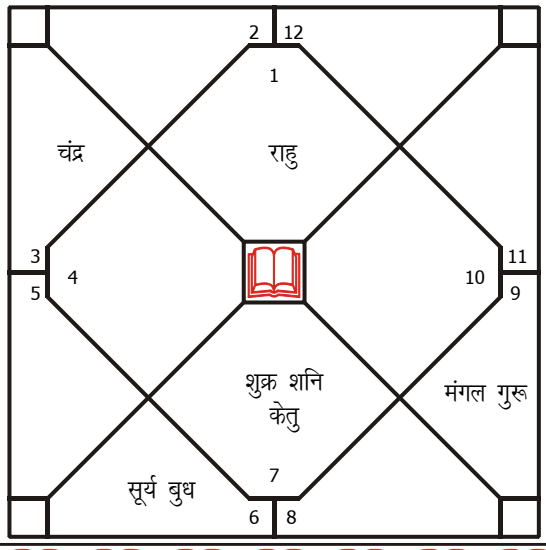

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

विंशोत्तरी दशा(महादशा)

दशा का भोग्यकाल : राहु 8 वर्ष 11 माह 22 दिन

	राहु (18 वर्ष)		गुरू (16 वर्ष)		शनि (19 वर्ष)	
से	16-10-1984		08-10-1993		08-10-2009	
तक	08-10-1993		08-10-2009		08-10-2028	
	राहु	-	गुरू	26-11-95	शनि	11-10-12
	गुरू	-	शनि	08-06-98	बुध	20-06-15
	शनि	-	बुध	14-09-00	केतु	29-07-16
	बुध	08-04-86	केतु	20-08-01	शुक्र	29-09-19
	केतु	26-04-87	शुक्र	20-04-04	सूर्य	11-09-20
	शुक्र	26-04-90	सूर्य	08-02-05	चंद्र	11-04-22
	सूर्य	20-03-91	चंद्र	08-06-06	मंगल	20-05-23
	चंद्र	20-09-92	मंगल	14-05-07	राहु	26-03-26
	मंगल	08-10-93	राहु	08-10-09	गुरू	08-10-28

	बुध (17 वर्ष)		केतु (7 वर्ष)		शुक्र (20 वर्ष)	
से	08-10-2028		08-10-2045		08-10-2052	
तक	08-10-2045		08-10-2052		08-10-2072	
	बुध	05-03-31	केतु	05-03-46	शुक्र	08-02-56
	केतु	02-03-32	शुक्र	05-05-47	सूर्य	08-02-57
	शुक्र	02-01-35	सूर्य	11-09-47	चंद्र	08-10-58
	सूर्य	08-11-35	चंद्र	11-04-48	मंगल	08-12-59
	चंद्र	08-04-37	मंगल	08-09-48	राहु	08-12-62
	मंगल	05-04-38	राहु	26-09-49	गुरू	08-08-65
	राहु	23-10-40	गुरू	02-09-50	शनि	08-10-68
	गुरू	29-01-43	शनि	11-10-51	बुध	08-08-71
	शनि	08-10-45	बुध	08-10-52	केतु	08-10-72

	सूर्य (6 वर्ष)		चंद्र (10 वर्ष)		मंगल (7 वर्ष)	
से	08-10-2072		08-10-2078		08-10-2088	
तक	08-10-2078		08-10-2088		08-10-2095	
	सूर्य	26-01-73	चंद्र	08-08-79	मंगल	05-03-89
	चंद्र	26-07-73	मंगल	08-03-80	राहु	23-03-90
	मंगल	02-12-73	राहु	08-09-81	गुरू	01-03-91
	राहु	26-10-74	गुरू	08-01-83	शनि	08-04-92
	गुरू	14-08-75	शनि	08-08-84	बुध	05-04-93
	शनि	26-07-76	बुध	08-01-86	केतु	02-09-93
	बुध	02-06-77	केतु	08-08-86	शुक्र	02-11-94
	केतु	08-10-77	शुक्र	08-04-88	सूर्य	08-03-95
	शुक्र	08-10-78	सूर्य	08-10-88	चंद्र	08-10-95

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

	गुरू - केतु		गुरू - शुक्र		गुरू - सूर्य		गुरू - चंद्र		गुरू - मंगल	
से			20-08-2001		20-04-2004		08-02-2005		08-06-2006	
तक	20-08-2001		20-04-2004		08-02-2005		08-06-2006		14-05-2007	
	केतु	04-10-00	शुक्र	30-01-02	सूर्य	04-05-04	चंद्र	18-03-05	मंगल	28-06-06
	शुक्र	30-11-00	सूर्य	18-03-02	चंद्र	28-05-04	मंगल	16-04-05	राहु	18-08-06
	सूर्य	16-12-00	चंद्र	08-06-02	मंगल	15-06-04	राहु	28-06-05	गुरू	03-10-06
	चंद्र	14-01-01	मंगल	04-08-02	राहु	28-07-04	गुरू	02-09-05	शनि	26-11-06
	मंगल	04-02-01	राहु	28-12-02	गुरू	07-09-04	शनि	18-11-05	बुध	14-01-07
	राहु	24-03-01	गुरू	06-05-03	शनि	22-10-04	बुध	26-01-06	केतु	03-02-07
	गुरू	09-05-01	शनि	08-10-03	बुध	03-12-04	केतु	24-02-06	शुक्र	29-03-07
	शनि	02-07-01	बुध	24-02-04	केतु	20-12-04	शुक्र	14-05-06	सूर्य	16-04-07
	बुध	20-08-01	केतु	20-04-04	शुक्र	08-02-05	सूर्य	08-06-06	चंद्र	14-05-07

	गुरू - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
से	14-05-2007		08-10-2009		11-10-2012		20-06-2015		29-07-2016	
तक	08-10-2009		11-10-2012		20-06-2015		29-07-2016		29-09-2019	
	राहु	24-09-07	शनि	29-03-10	बुध	28-02-13	केतु	13-07-15	शुक्र	09-02-17
	गुरू	19-01-08	बुध	03-09-10	केतु	25-04-13	शुक्र	20-09-15	सूर्य	06-04-17
	शनि	06-06-08	केतु	06-11-10	शुक्र	06-10-13	सूर्य	10-10-15	चंद्र	11-07-17
	बुध	08-10-08	शुक्र	07-05-11	सूर्य	25-11-13	चंद्र	13-11-15	मंगल	18-09-17
	केतु	28-11-08	सूर्य	01-07-11	चंद्र	16-02-14	मंगल	06-12-15	राहु	09-03-18
	शुक्र	22-04-09	चंद्र	01-10-11	मंगल	12-04-14	राहु	06-02-16	गुरू	11-08-18
	सूर्य	06-06-09	मंगल	04-12-11	राहु	07-09-14	गुरू	29-03-16	शनि	11-02-19
	चंद्र	18-08-09	राहु	17-05-12	गुरू	17-01-15	शनि	02-06-16	बुध	23-07-19
	मंगल	08-10-09	गुरू	11-10-12	शनि	20-06-15	बुध	29-07-16	केतु	29-09-19

	शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरू	
से	29-09-2019		11-09-2020		11-04-2022		20-05-2023		26-03-2026	
तक	11-09-2020		11-04-2022		20-05-2023		26-03-2026		08-10-2028	
	सूर्य	16-10-19	चंद्र	29-10-20	मंगल	04-05-22	राहु	24-10-23	गुरू	28-07-26
	चंद्र	15-11-19	मंगल	02-12-20	राहु	04-07-22	गुरू	11-03-24	शनि	22-12-26
	मंगल	05-12-19	राहु	27-02-21	गुरू	27-08-22	शनि	23-08-24	बुध	01-05-27
	राहु	26-01-20	गुरू	13-05-21	शनि	01-11-22	बुध	19-01-25	केतु	24-06-27
	गुरू	11-03-20	शनि	14-08-21	बुध	27-12-22	केतु	18-03-25	शुक्र	26-11-27
	शनि	06-05-20	बुध	04-11-21	केतु	20-01-23	शुक्र	09-09-25	सूर्य	12-01-28
	बुध	24-06-20	केतु	08-12-21	शुक्र	27-03-23	सूर्य	01-11-25	चंद्र	28-03-28
	केतु	14-07-20	शुक्र	13-03-22	सूर्य	17-04-23	चंद्र	26-01-26	मंगल	21-05-28
	शुक्र	11-09-20	सूर्य	11-04-22	चंद्र	20-05-23	मंगल	26-03-26	राहु	08-10-28

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

35 वर्ष की दशा (लाल किताब के अनुसार)

प्रथम चक्र 16-10-1984 से 15-10-2019 तक

शनि - 6 वर्ष		राहु - 6 वर्ष		केतु - 3 वर्ष	
राहु	16-10-1984 से 15-10-1986 तक	मंगल	16-10-1990 से 15-10-1992 तक	शनि	16-10-1996 से 15-10-1997 तक
बुध	16-10-1986 से 15-10-1988 तक	केतु	16-10-1992 से 15-10-1994 तक	राहु	16-10-1997 से 15-10-1998 तक
शनि	16-10-1988 से 15-10-1990 तक	राहु	16-10-1994 से 15-10-1996 तक	केतु	16-10-1998 से 15-10-1999 तक
गुरू - 6 वर्ष		**सूर्य - 2 वर्ष**		**चंद्र - 1 वर्ष**	
केतु	16-10-1999 से 15-10-2001 तक	सूर्य	16-10-2005 से 15-06-2006 तक	गुरू	16-10-2007 से 15-02-2008 तक
गुरू	16-10-2001 से 15-10-2003 तक	चंद्र	16-06-2006 से 15-02-2007 तक	सूर्य	16-02-2008 से 15-06-2008 तक
सूर्य	16-10-2003 से 15-10-2005 तक	मंगल	16-02-2007 से 15-10-2007 तक	चंद्र	16-06-2008 से 15-10-2008 तक
शुक्र - 3 वर्ष		**मंगल - 6 वर्ष**		**बुध - 2 वर्ष**	
मंगल	16-10-2008 से 15-10-2009 तक	मंगल	16-10-2011 से 15-10-2013 तक	बुध	16-10-2017 से 15-06-2018 तक
शुक्र	16-10-2009 से 15-10-2010 तक	शनि	16-10-2013 से 15-10-2015 तक	मंगल	16-06-2018 से 15-02-2019 तक
बुध	16-10-2010 से 15-10-2011 तक	शुक्र	16-10-2015 से 15-10-2017 तक	गुरू	16-02-2019 से 15-10-2019 तक

द्वितीय चक्र 16-10-2019 से 15-10-2054 तक

शनि - 6 वर्ष		राहु - 6 वर्ष		केतु - 3 वर्ष	
राहु	16-10-2019 से 15-10-2021 तक	मंगल	16-10-2025 से 15-10-2027 तक	शनि	16-10-2031 से 15-10-2032 तक
बुध	16-10-2021 से 15-10-2023 तक	केतु	16-10-2027 से 15-10-2029 तक	राहु	16-10-2032 से 15-10-2033 तक
शनि	16-10-2023 से 15-10-2025 तक	राहु	16-10-2029 से 15-10-2031 तक	केतु	16-10-2033 से 15-10-2034 तक
गुरू - 6 वर्ष		**सूर्य - 2 वर्ष**		**चंद्र - 1 वर्ष**	
केतु	16-10-2034 से 15-10-2036 तक	सूर्य	16-10-2040 से 15-06-2041 तक	गुरू	16-10-2042 से 15-02-2043 तक
गुरू	16-10-2036 से 15-10-2038 तक	चंद्र	16-06-2041 से 15-02-2042 तक	सूर्य	16-02-2043 से 15-06-2043 तक
सूर्य	16-10-2038 से 15-10-2040 तक	मंगल	16-02-2042 से 15-10-2042 तक	चंद्र	16-06-2043 से 15-10-2043 तक
शुक्र - 3 वर्ष		**मंगल - 6 वर्ष**		**बुध - 2 वर्ष**	
मंगल	16-10-2043 से 15-10-2044 तक	मंगल	16-10-2046 से 15-10-2048 तक	बुध	16-10-2052 से 15-06-2053 तक
शुक्र	16-10-2044 से 15-10-2045 तक	शनि	16-10-2048 से 15-10-2050 तक	मंगल	16-06-2053 से 15-02-2054 तक
बुध	16-10-2045 से 15-10-2046 तक	शुक्र	16-10-2050 से 15-10-2052 तक	गुरू	16-02-2054 से 15-10-2054 तक

तृतीय चक्र 16-10-2054 से 15-10-2089 तक

शनि - 6 वर्ष		राहु - 6 वर्ष		केतु - 3 वर्ष	
राहु	16-10-2054 से 15-10-2056 तक	मंगल	16-10-2060 से 15-10-2062 तक	शनि	16-10-2066 से 15-10-2067 तक
बुध	16-10-2056 से 15-10-2058 तक	केतु	16-10-2062 से 15-10-2064 तक	राहु	16-10-2067 से 15-10-2068 तक
शनि	16-10-2058 से 15-10-2060 तक	राहु	16-10-2064 से 15-10-2066 तक	केतु	16-10-2068 से 15-10-2069 तक
गुरू - 6 वर्ष		**सूर्य - 2 वर्ष**		**चंद्र - 1 वर्ष**	
केतु	16-10-2069 से 15-10-2071 तक	सूर्य	16-10-2075 से 15-06-2076 तक	गुरू	16-10-2077 से 15-02-2078 तक
गुरू	16-10-2071 से 15-10-2073 तक	चंद्र	16-06-2076 से 15-02-2077 तक	सूर्य	16-02-2078 से 15-06-2078 तक
सूर्य	16-10-2073 से 15-10-2075 तक	मंगल	16-02-2077 से 15-10-2077 तक	चंद्र	16-06-2078 से 15-10-2078 तक
शुक्र - 3 वर्ष		**मंगल - 6 वर्ष**		**बुध - 2 वर्ष**	
मंगल	16-10-2078 से 15-10-2079 तक	मंगल	16-10-2081 से 15-10-2083 तक	बुध	16-10-2087 से 15-06-2088 तक
शुक्र	16-10-2079 से 15-10-2080 तक	शनि	16-10-2083 से 15-10-2085 तक	मंगल	16-06-2088 से 15-02-2089 तक
बुध	16-10-2080 से 15-10-2081 तक	शुक्र	16-10-2085 से 15-10-2087 तक	गुरू	16-02-2089 से 15-10-2089 तक

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

उच्च नीच का ग्रह

जब कोई ग्रह ऐसी राशि में हो जो इसके लिए उच्च फल/नीच फल की मुकर्रर है।

(1) आपकी कुंडली में शनि अपने उच्च घर में है।

मांगलिक

अगर कुण्डली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष होता है। शास्त्रानुसार कुछ स्थितियों में मांगलिक दोष भंग हो जाता है।

(1) आपकी कुण्डली में मांगलीक दोष नहीं है।

मंगल बद

मंगल बद होने पर यह धन सम्पत्ति दोनों को नष्ट कर देता है और यह भाई और पुत्रों पर भी भारी होता है।

(1) आपकी कुण्डली में मंगल बद है। जो चंद्र के 3 में होने के कारण हो रहा है।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

ऋण

जिस ग्रह के भाव में (राशि) में उसका शत्रु स्थित हो और उस शत्रु ग्रह का अपना प्रभाव नष्ट हो रहा हो तो वह जन्म कुण्डली ऋण की कुण्डली होगी।

(1) आपकी जन्म कुण्डली के अनुसार आपको बुध अर्थात् बहन स्त्री के भाई ऋण का दोष है।
(2) आपकी जन्म कुण्डली के अनुसार आपको बृहस्पति अर्थात् पितृ ऋण का दोष है।
(3) आपकी जन्म कुण्डली के अनुसार आपको शुक्र अर्थात् स्त्री ऋण का दोष है।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

काल सर्प योग

राहु और केतु के मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। इस योग के कारण मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में कलह के रूप में प्रकट होती है। इसके कारण क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल मिलते रहें।

(1) आपकी कुण्डली में कालसर्प योग नहीं है।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

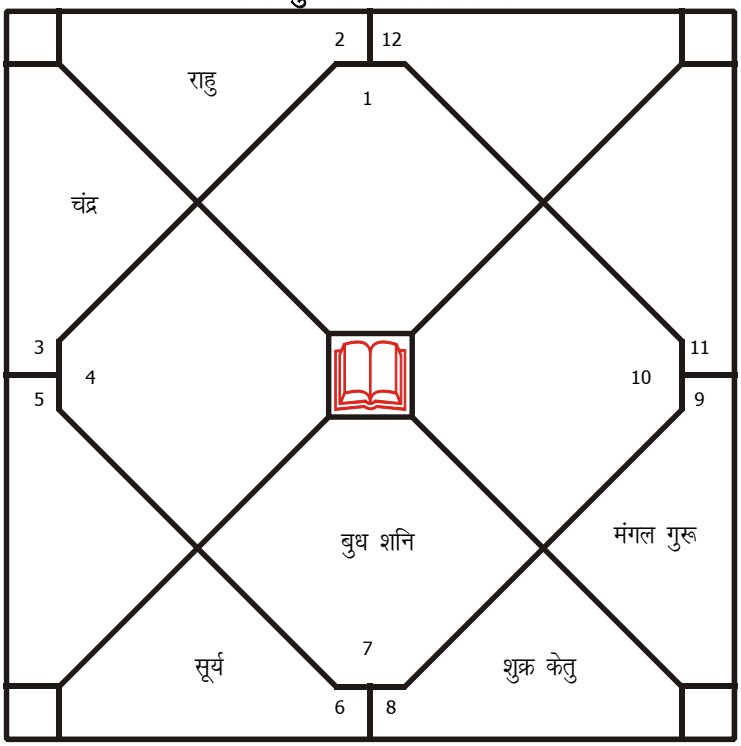

फलादेश

सूर्य

जन्म आमतौर पर नान के घर या पैतृक घर से बाहर होगा। राजदरबार और अपने स्वास्थ्य की मन्दी घटनाएँ हो। जब राहु खाना नं.2 और शनि खाना नं.8 में होने से सूर्य ग्रहण या राजदरबार एवं स्वास्थ्य में कमी के समय धर्म-स्थान (मन्दिर) में दूसरों द्वारा दान की गई वस्तु अपने घर रखें। जब मंगल खाना नं.10 में लड़के पर लड़के मरे। जब शनि खाना नं.12 में स्त्री सुख सहयोग में कमी। जब चन्द्रमा खाना नं.12 में स्त्री या स्वयं काना हो। सरकारी नौकरी में या व्यापार में बार-बार तबदीली होती है। मित्र और शत्रु दबकर रहेंगे। निःसंतान नहीं होगा।

उपायः

1. भूमि में तांबे के छः (6) चौरस टुकड़े दबायें।
2. धर्म-स्थान में दूसरे व्यक्ति द्वारा दान दी गई वस्तु घर में रखें।
3. छोटी कन्याओं की सेवा करें।
4. सोते समय चंद्रमा की चीजें (चावल-दूध-चांदी-मोती-धोती और परना) सिरहाने रखकर प्रातःकाल लोगों में बांटें।
5. चाँदी की डिब्बी में नदी का जल डालकर रखें।
6. बंदर को गुड़ या गेहूँ या भूरे रंग की चीटिंयों को गेहूँ या बाजरा दें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

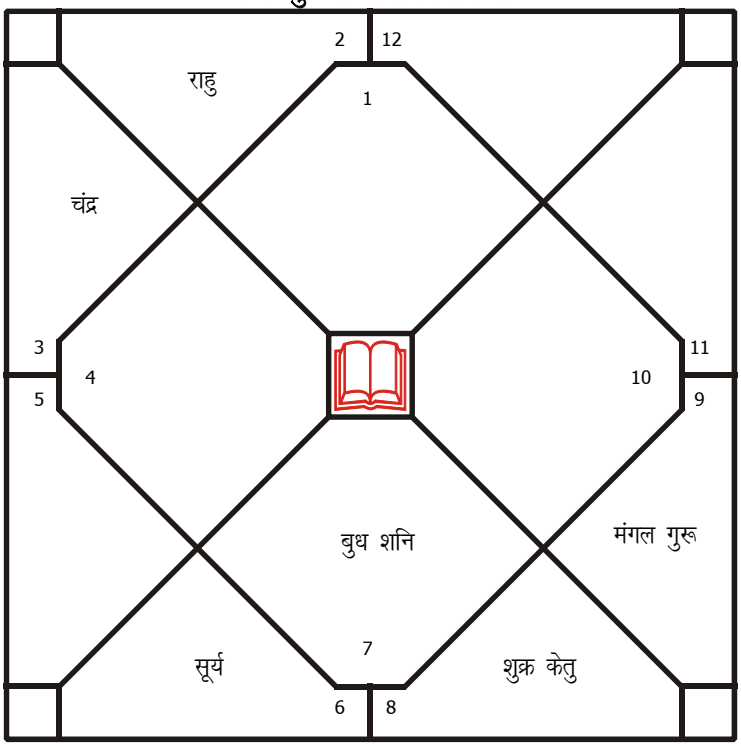

फलादेश

बुध

हाजिर माल का व्यापारी लाभदायक होगा। जातक की कलम में तलवार से अधिक शक्ति होगी। झगड़ा-फसाद या किसी प्रकार के मुकदमे आदि नही होगें। जब चन्द्रमा खाना नं.1 में समुद्री यात्रा से धन कमाएं। साली से सम्बन्ध बर्बादी का कारण बने। बुध सोया हुआ तो निष्फल होगा। जब शनि खाना नं.3 स्त्री घराना अमीर होता है। बृहस्पति खाना नं.9 में नीच फल। जब बुध और बृहस्पति खाना नं.9 में हो तो विवाह में गड़बड़। जब जागता हुआ बुध खाना नं.1 में कोई ग्रह हो तो अपनी कुल परिवार को तारने वाला हीरा होगा। बुढ़ापा सदा उत्तम होगा। केतु खाना नं.1 या खाना नं. 8 में हो तो पत्नी का बहन भाईयों से मिलकर हानि पहुंचाने का यत्न करेंगे। बुध दूसरों के लिए उत्तम लेकिन अपने लिए मंदा फल देगा।

उपायः

1. अपनी बहन, लड़की, बुआ, मासी, साली को साथ न रखें।
2. साझेदारी में व्यापार मत करें।
3. काले रंग की भोड़ी गाय की सेवा करें।
4. पन्ना की अंगूठी धारण करें।
5. बार-बार न थूकें।
6. हर प्रकार के भौतिक यंत्र ठीक रखे।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

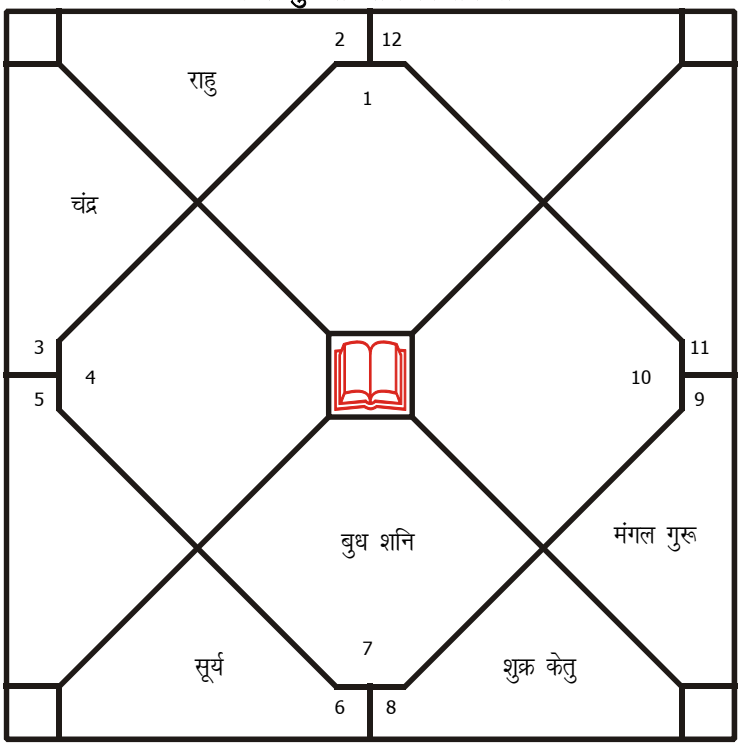

फलादेश

शुक्र

पत्नी चिड़चिड़ी क्रोधी एवं कठोर स्वभाव की होगी। यदि वह किसी को बुरा कहेगी एकदम सच होगा। जातक मन ही मन कुढ़ता होगा कि उसकी कद्र नहीं अतः दुखी रहता है। काम वासना अधिक होती है। नेकी की पूरी बात होने की शर्त नहीं। शुक्र को शुभ करने के लिए जातक किसी से कभी भी दान न ले और मन्दिर में सिर झुकाने से शत्रु का सिर अपने आप कट जाएगा। किसी न किसी की जमानत देकर या किसी के लिये झूठ बोलकर अपने लिए परेशानी खड़ी कर लेंगे। यदि खाना नं.2 खाली हो तो विवाह 25 वर्ष के बाद करें। इन में से कोई ना कोई उपाय करने से जातक का चाल-चलन खराब नहीं होगा। अच्छी आय होते हुए भी)ण की संभावना बनती रहेगी।

उपायः

1. गन्दे नाले में 100 दिन नीले फूल या ताम्बे का पैसा डालें।
2. पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो तो उसके वज़न के बराबर चरी (ज्वार) धर्म-स्थान (मन्दिर, गुरुद्वारा, चर्च, मस्जिद) में दान करें या भूमि में दबावें।
3. गाय दान या गाय की सेवा करें।
4. अच्छी आय होते हुए भी ऋण की संभावना बनती रहेगी।
5. जिमीकन्द, गाजर 800 ग्राम या 8 किलो शुक्र के दिन मंदिर में दे।
6. माता-भाई-बहन का आशीर्वाद तथा सहायता लेते रहें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

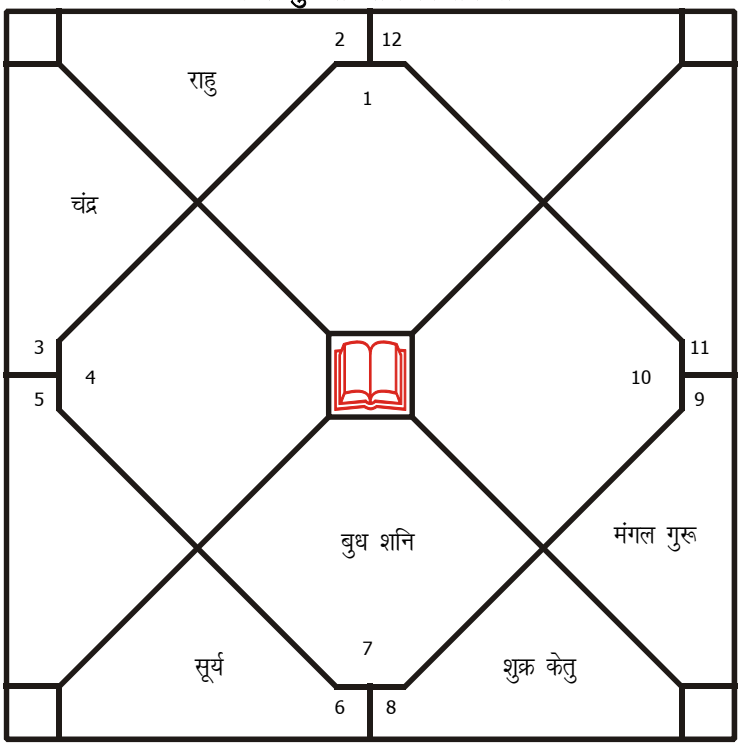

फलादेश

मंगल

यदि मंगल खाना नं. 9 हो तो शुभ फल देगा। जातक को राज्य अधिकारी बनने और धन कमाने का अवसर मिलेगा। खाने-पीने का सामान होटल-मिठाई आदि काम जातक के लिए उत्तम रहेगा। धन के लिए किसी आगे हाथ न फैलाना पड़ेगा। जब 13-14 वर्ष का हो तो माता पिता के पास खूब धन आऐ और 28 वर्ष की आयु में खूद राजा की गिनती का मनुष्य हो जिसका निर्वाह बहुत उत्तम हो। नास्तिक न बनें पुरानी रस्मों और भगवान् की पूजा न छोडों। मन्दिर या किसी भी धर्म स्थान में सर झुकायें।

उपायः

1. धर्म-स्थान (मन्दिर, गुरूद्वारा, मस्जिद, चर्च) में गुड़-चावल-चीनी, दूध, पैसा सिर झुकाकर चढ़ाया करें।
2. बड़े भाई की आज्ञा का पालन करें और उनकी सेवा और आशीर्वाद लेते रहें तो हर प्रकार से सुखी रहेगें।
3. जिमीकन्द, दही और पनीर (शुक्र की वस्तुएं) आदि जमीन में दवावें।
4. मूँगा पहनें या लाल रंग का रुमाल सदा अपने पास रखें।
5. भाई की स्त्री की सेवा करें।
6. खाने के बाद मेहमानों को सौफ और देसी-खांड खिलायें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

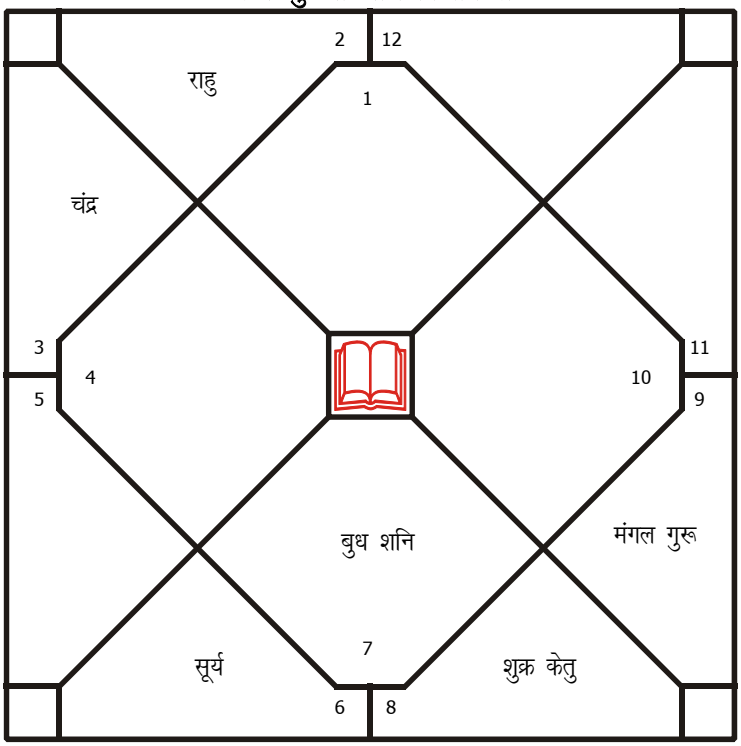

फलादेश

गुरू

जातक प्रसिद्ध, अमीर, माननीय और सुनहरी खानदान में जन्म। संतान से सुख होगा। आयु 70 वर्ष से अधिक होगी। यह बृहस्पति का अपना घर जातक के भाग्य को जगाने वाला। (नौ) 9 निधि 12 सिद्धियों का स्वामी होता है। खाना नं. 3 और खाना नं. 5 भाव खाली माया इसके पीछे दौड़े। खाना नं. 2-5-9-11 में बुध, शुक्र या पापी ग्रह न हो तो धनवान अच्छा परिवार हो। बृहस्पति खाना नं. 9 शनि खाना नं. 5 धन दौलत खूब परन्तु सन्तान मन्दी। सूर्य कायम करने से हर प्रकार से बरकत हो। सेहत मन्दी दिल की बीमारी खाना नं.1 खाली। धर्म-प्रचारक, लेखक, संपादक, ज्योतिषी या वैद्य होगा।

उपायः

1. गंगा स्नान करे।
2. नाक में 100 दिन चाँदी रखे।
3. यदि शनि या राहु खाना नं. 5 में हो तो धर्म-स्थान (मन्दिर, गुरूद्वारा, गिरजाघर, मस्जिद) में बादाम चढ़ाकर आधे वापिस लाकर घर में रखे।
4. प्रतिदिन धर्म-स्थान में (मंदिर, गुरूद्वारा, गिरजाघर, मस्जिद) जाये।
5. चावल नदी में बहाकर चन्द्रमा को खाना नं.4 कायम करे।
6. बड़ो का मान करें तथा उनके साथ मिलकर रहे।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

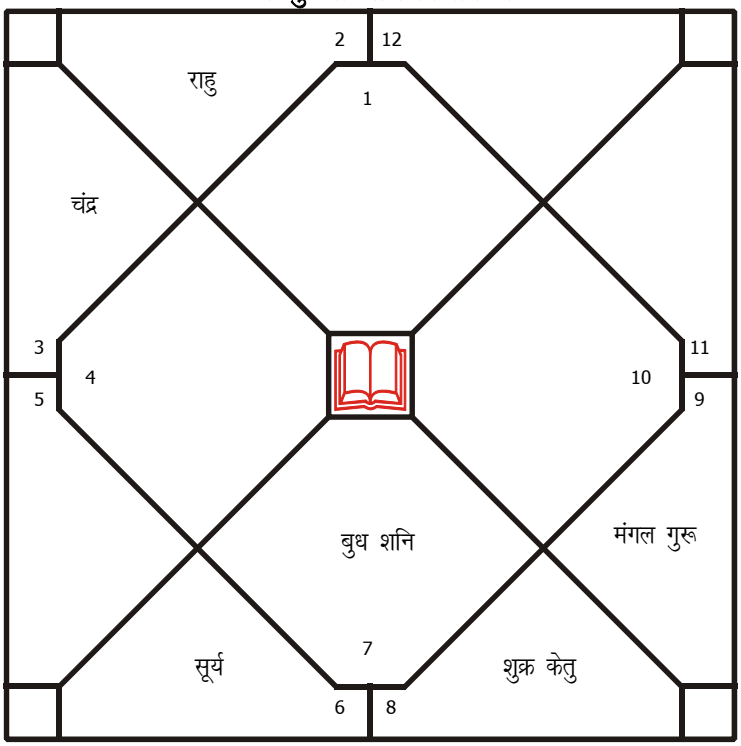

फलादेश

शनि

जातक चालाक और दीर्घायु। मकान बने बनाऐं बहुत मिलेंगे। यात्रओं से लाभ। यदि जातक अण्डा, मीट, शराब का सेवन करें तो शनि नीच राशि का फल देगा तथा सजा तक हो सकती है। शनि खाना नं. 7 के समय खाना नं.1 (लग्न) खाली हो तो हर तरह की बरकत। जब बुध खाना नं.11 में हो तो गाँव का मालिक रईस होगा। जब शुक्र का साथ हो तो स्त्री लम्बे समय तक बीमार रहे। जब मंगल शुक्र, शनि एक साथ हो उम्दा फल, स्वास्थ्य उत्तम, लम्बी उम्र, संतान सुख शत्रुता के समय ईश्वर से छुपी मदद मिलेगी।

उपायः

1. (सोया शनि) काली बांसुरी खांड से भरकर जंगल में दबावें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर रखें।
3. किसी रिश्तेदार से सांझा व्यापार मत करें।
4. काली गाय की सेवा करे।
5. शादी 22 वर्ष की आयु तक न करें।
6. मांस-मदिरा-अण्डा का प्रयोग न करें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

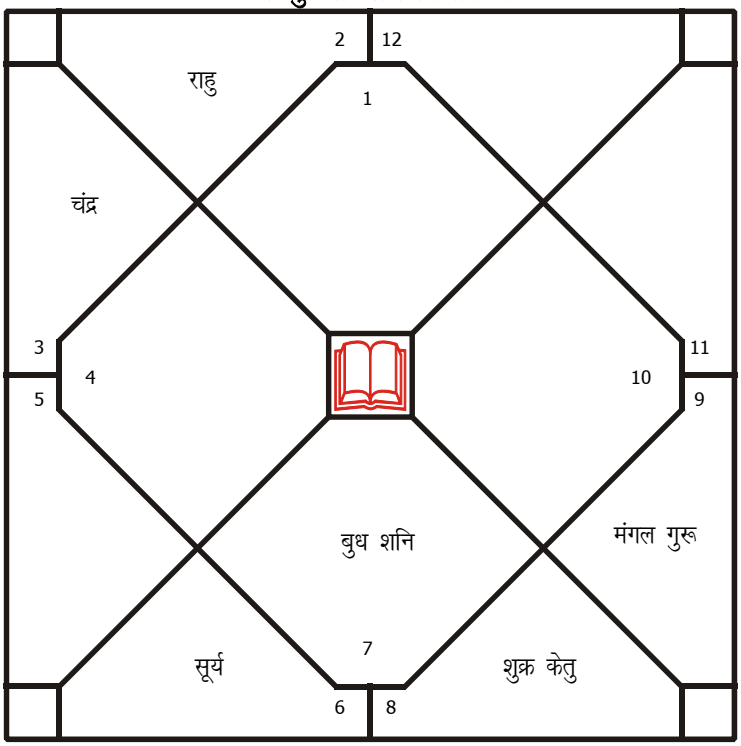

फलादेश

चंद्र

यदि मंगल बद हो तो माता से अनबन। कठिनाई, कष्ट एवं दुख मृत्यु तथा चोरी की रक्षा होगी। मन की शान्ति रहेगी। परिवार में स्त्रियों का मान-सम्मान रहेगा। सदा भगवान् की सहायता मिलती है। लम्बी यात्रएं होगी। मधुर-भाषी एवं बहन, भाईयों का पालन करने वाला आयु और धन में वृद्धि करने वाला होगा। कन्या के जन्म पर खोया न बनाएँ चन्द्रमा की चीजें दान करें। धन दौलत एवं ससुराल के लिए कन्यादान करें। लड़के के जन्म पर सूर्य की चीजें (गेहूँ, बाजरा, शिलाजीत, ताँबा) दान करें। जब बुध खाना नं.11 में हो तो आयु कम से कम 80 वर्ष हो। वर्ष का हर तीसरा मास श्रेष्ठ रहता है। यह घर मंगल का पक्का घर है यहाँ चंद्रमा के होते मंगल का प्रभाव भी साथ होगा, जो जीवन में सफलता देगा।

उपायः

1. दुर्गा पूजा एवं दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
2. लड़की के जन्म दिन पर दूध, चावल एवं चाँदी दान करें।
3. लड़के के जन्म दिन पर गेहूँ, गुड़ एवं ताँबा (सूर्य की चीजे) आदि का दान करें।
4. लड़की या बहन का कन्यादान करें।
5. छोटी कन्याओं को भोजन खिलाये एवं लाल रंग का कपड़ा दें।
6. धन संपति के लिए घोड़ा या चकोर पालें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

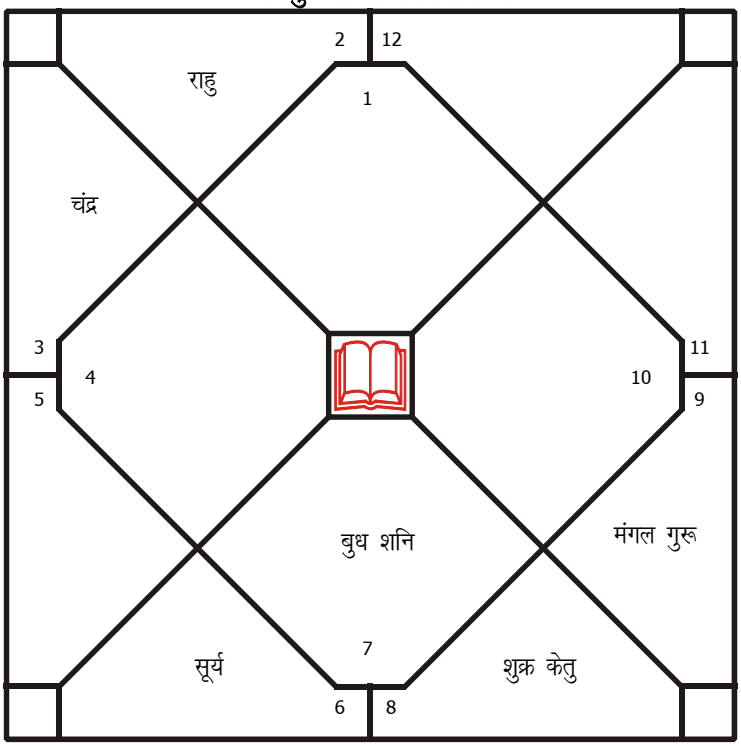

फलादेश

राहु

जातक राजा या उच्च अधिकारी या मन्दिर का मठाधीश हो तो हजारों व्यक्तियों की पालन करने वाला। गृहस्थ-जीवन ठीक। धन की वर्षा उस दिन होगी जब शनि खाना नं.1 में आ जाये और बृहस्पति भी उत्तम हो। ऐसा जातक मन्दिर में चोरी करने से नहीं डरेगा। ज़र, जोरू, जमीन की हानि का भय। राहु के अशुभ होने की निशानी हाथों के नाखूनों का झड़ जाना होता है। वह भी दिन-दहाड़े धन हानि, गबन एवं चोरी आदि होगी। आतड़ियों का रोग। नेक हालत में शुक्र का (25 साल समय) आयु धन के आराम का होगा। जब शनि अशुभ हो तो भाग्य की हालत मंदे जहर से भरे हुए धुएं जैसी होगी। ठोडी के पास काले रंग का तिल होगा।

उपायः

1. चाँदी की ठोस गोली पास रखने से मदद होगी।
2. विवाह के पश्चात् अपनी ससुराल से बिजली का सामान मत लें।
3. हाथी के पैरों की मिट्टी कुऐं में गिराएं।
4. माता से झगड़ा मत करे।
5. केसर-हल्दी-सोना-पीतल (बृहस्पति की चीज़ों) अपने पास रखें।
6. मकान के उत्तर-पश्चिम दिशा में चाँदी या पानी कायम करे।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

जन्म कुंडली लाल किताब से

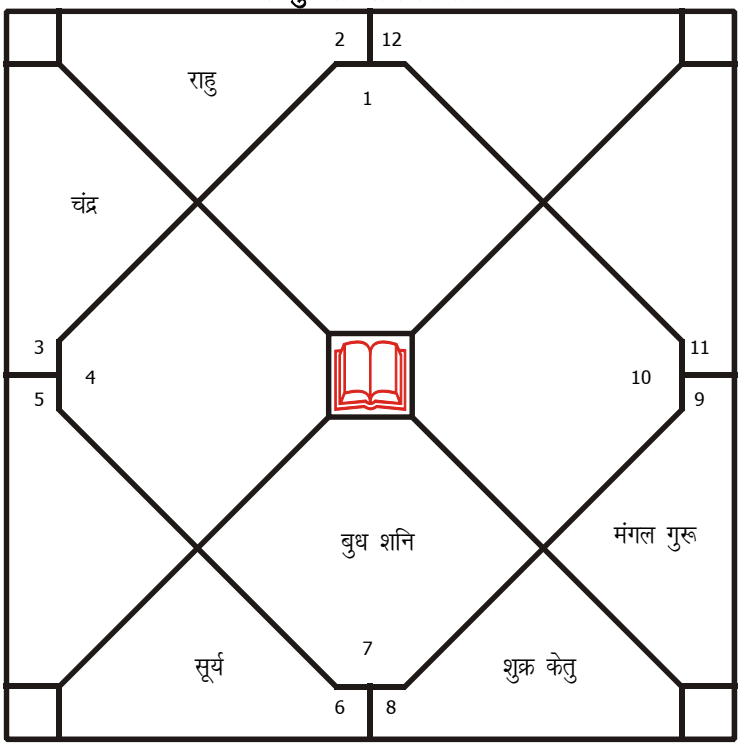

फलादेश

केतु

जब मंगल खाना नं.12 शनि खाना नं.1 में हो तो ऐसे टेवे वाले के जन्म से आमतौर पर 12 मास पहले भाई की मृत्यु होगी। जब गुरु और मंगल खाना नं. 6-12 में हो तो केतु का प्रभाव कभी मंदा न होगा। केतु की बीमारी पेशाब की नाली से कतरा कतरा निकले। औलाद जल्दी कायम हो या देर से, जातक की आयु 70 वर्ष से कम नहीं होगी। मौत आने का पहले पता लग जाता होगा। जब बृहस्पति अशुभ हो तो न सिर्फ केतु अशुभ बल्कि मंगल भी अशुभ रहेगा, बुध, शुक्र ठीक नहीं और नर औलाद देर से होगी। लिंग-गुदा पर तिल है।

उपायः

1. धर्म-स्थान (मन्दिर, गुरुद्वारा, मस्जिद, गिरजाघर) में काला, सफेद कम्बल दान करें।
2. अगर कोई और ग्रह भी खाना नं.8 में साझा हो तो उस ग्रह से संबंधित चीजों को भी कम्बल में बाँधकर साथ ही दबाये।
3. पीले फूल, सोना, केसर या हल्दी धर्म-स्थान में या कुल पुरोहित को दे।
4. कान छेदन कराऐं 96 घन्टे या 96 दिन तक सूराख रखें।
5. माथे पर केसर का तिलक लगायें या खायें।
6. पाँव के अँगूठे में चाँदी का छल्ला पहनें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

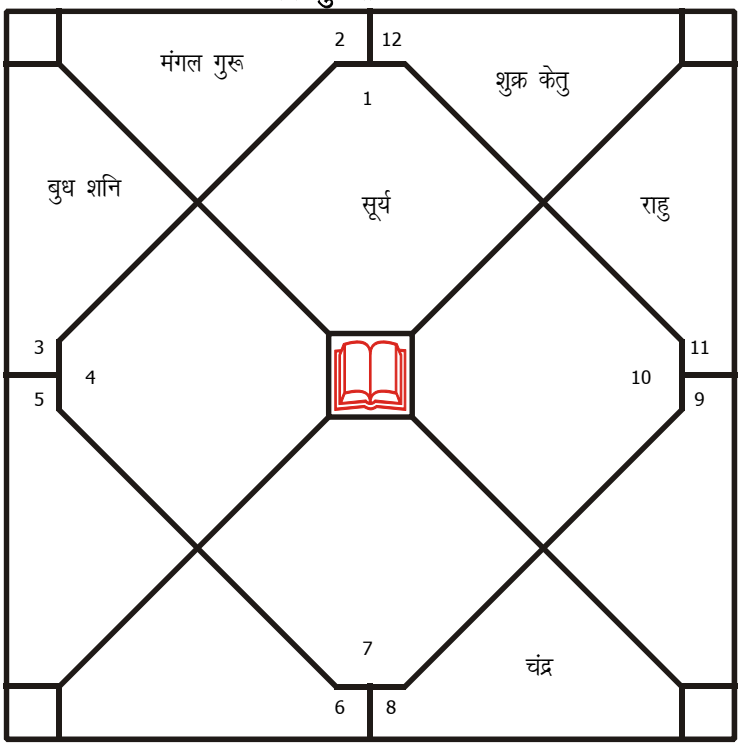

फलादेश

सूर्य

पहली सन्तान लड़का होगा जिसका जन्म दिन या आधी रात के बाद होगा। क्रोधी स्वभाव। सुनने की बजाए देखने पर विश्वास करेगा। सूर्य खाना नं.1 एवं शुक्र खाना नं.7 (वर्ष फल में) पिता बचपन में मरे। सूर्य खाना नं.1 के समय जब मंगल खाना नं.5 में हो तो लड़का मरे या गर्भपात हो। शुक्र खाना नं. 7 दिन में भोग करने का शौकीन होने के कारण पत्नी की सेहत पर बुरा प्रभाव रहेगा। खाना नं.8 में हो तब चूल्हा दूध से बुझाऐ। यदि खाना नं.7 खाली सूर्य के उत्तम फल के लिए शीघ्र विवाह करें। जातक धर्मशालाऐं मकान बनबाने और कुएँ बनबाने को शौकीन। सूर्य खाना नं. 1 के समय चन्द्रमा खाना नं.2 शनि खाना नं.11 में मान-सम्मान एवं धन सम्पत्ति में वृद्धि।

उपायः

1. शराब, मीट एवं मछली का सेवन न करें।
2. मंगल वस्तुओं (देसी-खांड-मसूर की दाल-सौंफ-छुहारे-शहद) का दान करें।
3. यदि खाना नं. 7 खाली हो तो घर में हैण्ड पम्प लगावें।
4. दिन के समय सम्भोग न करें।
5. दोनों में से एक गुड़ खाना छोड़ दे।
6. शनि की वस्तुएँ (नारियल, तेल, बादाम, उड़द एवं चनें की दाल) जल प्रवाह करें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

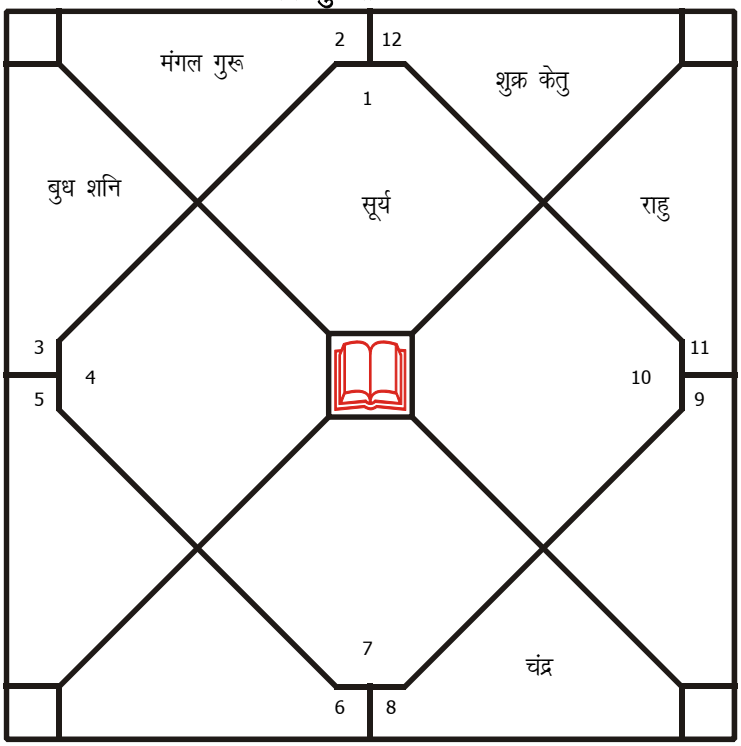

फलादेश

बुध

अपने भाई-बंधु तथा संबंधियो के लिए शुभ प्रभाव रहेगा। जातक यदि डाक्टर बने तो सफल डाक्टर। थूकने वाला कोहड़ी मन्दा प्रभाव होगा। मूँगी की दाल, हरे कपड़े पहनने से बीमारी का बहाना होगा। दक्षिण का दरवाज़ा बुध खाना नं.8 का फल देगा और सब तरह खास कर स्त्री, धन, ससुराल के लिए अशुभ। जब शुक्र खाना नं.4 में संतान देर से हो। जब बुध खाना नं.3 और चन्द्रमा खाना नं.11 में हो तो भाईयों के लिए मन्दा रहेगा। सूर्य खाना नं.11 में हो तो जातक की संतान मामे के परिवार का उत्तम असर देगा। जब खाना नं. 3 का सोया बुध अर्थात् 9-11 खाना खाली हो तो बुध का हर प्रकार से शुभ फल रहेगा।

उपायः

1. हर रोज फटकरी से दाँत साफ करना सहायक होगा।
2. ढ़ाक के हरे पत्ते दूध से धोकर बाहर वीराने में दबाएँ।
3. रात के समय मूंग पानी में भिगो कर प्रातः जानवरों को डालें।
4. दक्षिण दरवाजे का घर बदलें।
5. पीले रंग की कौड़ियाँ जलाकर चलते दरिया में बहाएं।
6. नाक छेदन 100 दिन के लिये करवायें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

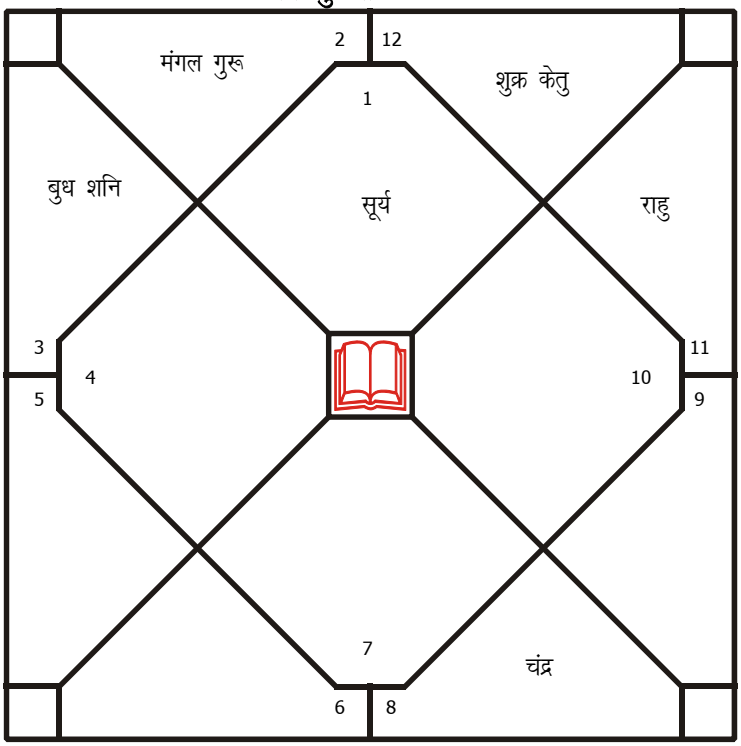

फलादेश

शुक्र

राजदरबार से उत्तम फल। स्त्री का सुख हलका। मर्द को पूरा। रात का आराम और धन का सुख होगा। औरत का सुख 37 साल होगा। शुक्र खाना नं. 12 में होने से स्त्री की सेहत खराब। सरकारी काम या व्यवसाय ऊँचा ही रहेगा। खाना नं. 12 में शुक्र से जातक धार्मिक रहने से शुभ फल मिलेगें। बुध खाना नं. 6 एवं शुक्र खाना नं. 12 में दोनों ग्रह अच्छा फल देगें। स्त्री की इज्जत करें। स्त्रियों के द्वारा प्रत्येक कार्य शुभ फल देगा। आयु लम्बी। स्त्री आड़े समय में काम आने वाली और पति की हर मुसीबत-बीमारी को अपने ऊपर लेती रहेगी।

उपायः

1. पत्नी के हाथों में नीले रंग के फूल पक्की शाम को वीराने में दबावें।
2. अपनी पत्नी के हाथ से धर्म-स्थान में कुछ दान करें।
3. गाय की सेवा करें।
4. स्त्री पूजा और प्यार की लहर गृहस्थ जीवन में सुख में वृद्धि होगी।
5. चाल-चलन ठीक रखें।
6. देशी घी का दीया जलावे।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

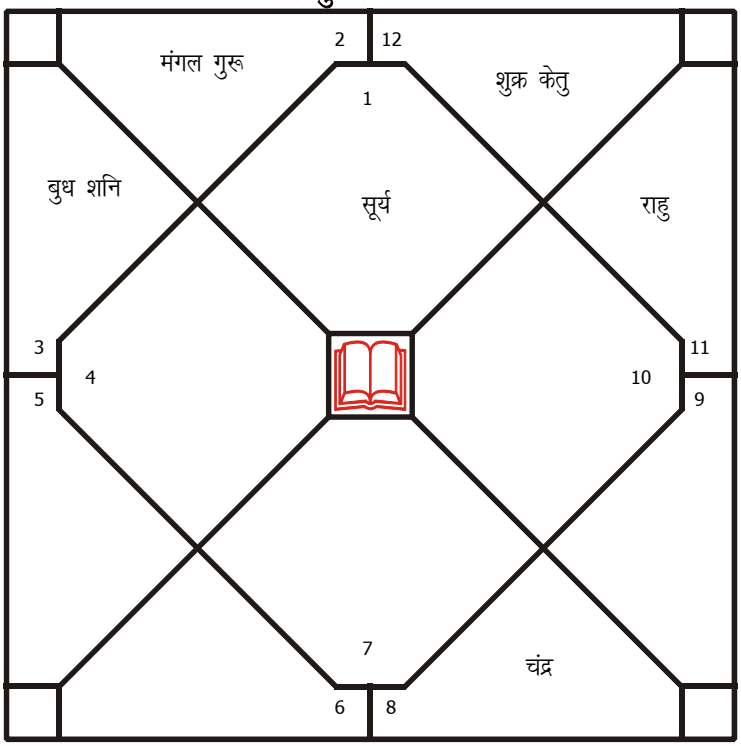

फलादेश

मंगल

दूसरों की सहायता करने से धन बढ़े वरना घटें। विद्या में विघ्न। गुप्त विद्याओं (ज्योतिष) आदि को जानने वाला। स्वयं बड़ा भाई या भाईयों से बड़ा बनता आवे। जब खाना नं. 8-9-10-12 में सूर्य, बृहस्पति शनि या बुध का प्रभाव हो तो बल्कि मेहनत से धनवान होगा। खाना नं. 2 में मंगल पर मित्र ग्रहों या बुध खाना नं. 2 का प्रभाव जातक के इरादे का कच्चा होगा। ससुराल से प्राप्त हुआ दहेज का धन या राहु की चीजें या संबंधियों से भी फलदायक और ससुराल के परिवार में सदा बरकत होगी। जब मंगल बद (अशुभ) हो तो दूसरों के लिए छाती का सांप और जातक किसी लड़ाई झगड़े में मारा भी जा सकता है।

उपायः

1. कुँआ-घोड़ी आदि (चन्द्र की वस्तुओं) को स्थापित करने से जातक को और सुसराल में धन वृद्धि होगी।
2. भाईयों से झगड़ा मत करें उनका अपमान मत करें।
3. चौरस चाँदी (मंगल बद) को अपने पास रखे।
4. रेवड़ियाँ या पतासे नदी में प्रवाह करें।
5. लाल रंग का रूमाल अपने पास रखें।
6. छोटे बालक को गेहूँ-गुड़ दें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

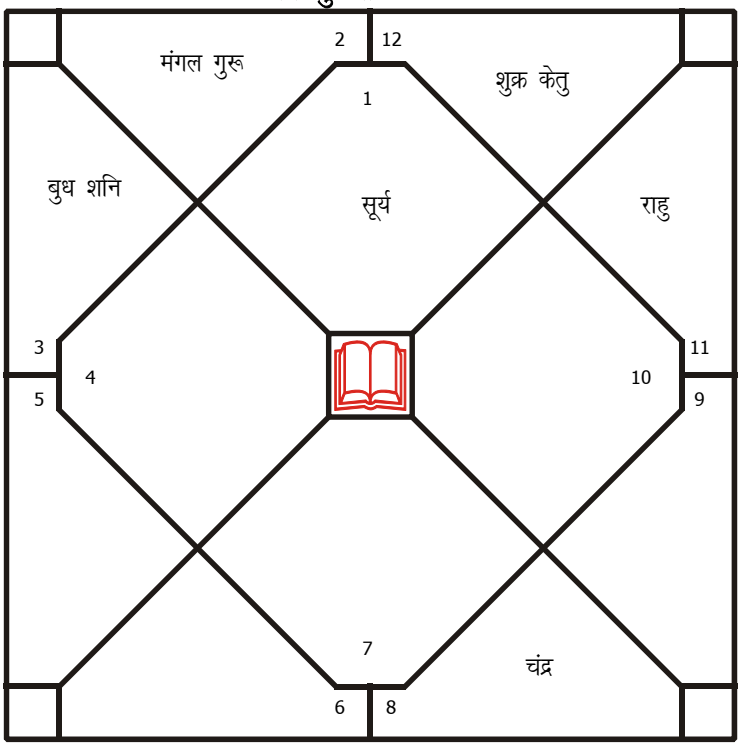

फलादेश

गुरू

जब खाना नं. 2-6-8 भाव शुभ हो या खाना नं. 8-10 भाव में मन्दी हवा खाना नं. 2 में ना जाये और खाना नं. 12 भी मंदा न हो तो जातक को दबा माल या लाटरी या निःसन्तान का जायदाद मिले। यदि वर्ष फल में शनि खाना नं. 2 आये तो स्वास्थ्य बिगड़े और सुसराल में धन हानि हो। केतु खाना नं. 6 में जातक की मुत्यु का पहले ही पता चलता है। बुध खाना नं.8 शनि खाना नं.10 में हो तो धन हानि या बुजुर्ग या दुःखी रहै गे। जब शनि नं. 12 में हो तो नैपोलियन की तरह जमाने का एक वीर, काम का आदमी हो सुखी हो। 27 वर्ष से राजदरबार में या अपने काम में तरक्की करेगा। मिट्टी के कामों से लाभ रहेगा। सब काम अपने आप बनेगें। जीवन साथी सुंदर होगी।

उपायः

1. साँप को दूध पिलाऐं।
2. परोपकारी बनें एवं दान धर्म में विश्वास रखें।
3. यदि उस समय षष्टम एवं अष्टम भाव (घर) में अशुभ ग्रह हो तो उनका उपाय अवश्य करें।
4. घर आए व्यक्ति की सेवा से पीछे न हटें।
5. केसर या हल्दी का तिलक करें।
6. घर में कच्चा हिस्सा अवश्य रखें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

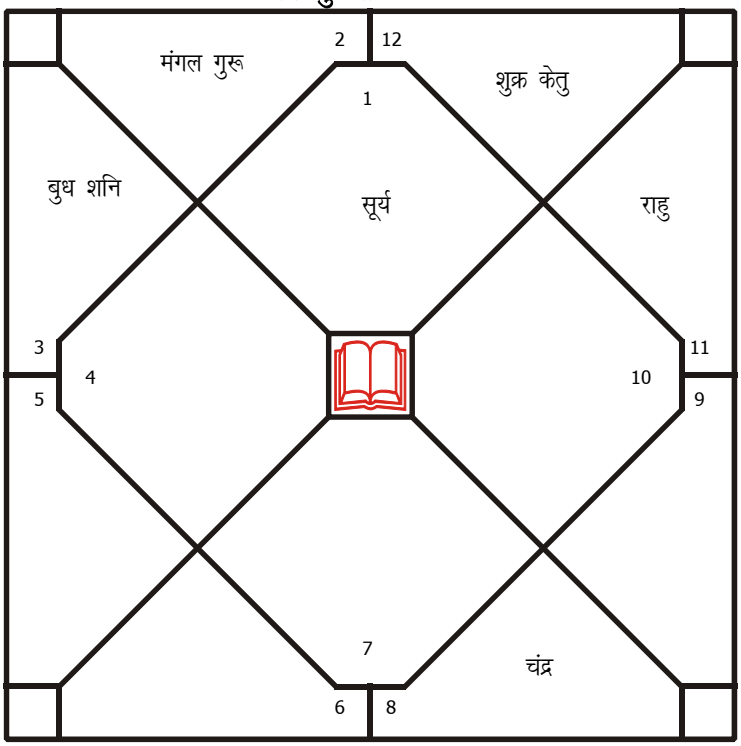

फलादेश

शनि

दूसरों के कार्यों को बिगाड़ने वाला परन्तु स्वयं आराम पावे। धन के लिए एवं घर में प्रवेश करते समय दायें हाथ में अन्धेरी कोठरी बनाकर उसमें साबुत बादाम और नारियल रखें। खाना नं. 3 में शनि-राहु के वक्त चन्दमा खाना नं.11 में हो तो माता के लिए अशुभ। यदि घर का द्वार दक्षिण या पूर्व की ओर हो उसमें रहने से धन और परिवार की हानि होती है। जब तक केतु (कुत्ते) की पालन करता रहेगा फल उत्तम तथा मकान बनते रहेगें। जब तक जातक शराब, मांस अण्डे का प्रयोग नहीं करेगा तो उसका असर आयु पर शुभ प्रभाव रहेगा। परन्तु आर्थिक स्थिति में कमी ही रहेगी। शनि खाना नं.3 सूर्य खाना नं. 1-3-5 में हो तो केतु नर सन्तान और खुद शनि का असर अशुभ होगा। नज़र की दवाई इसमें को मुफ्रत बाटें तो स्वयं की नजर में बरकत होगी।

उपायः

1. मकान के आखिर में अन्धेरी कोठरी बनावे।
2. कुत्ता-कुतिया का जोड़ा प्लाट पर रखें। जब मकान की नींव खोदें।
3. अपने मकान का मुख्य द्वार पूर्व या दक्षिण दिशा में मत बनाऐं।
4. कुत्ते (केतु) का पालना शुभ-फल देगा।
5. बहते पानी में चावल बहाना लाभदायक होगा।
6. छत पर दरवाजे या इंधन आदि न रखे।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

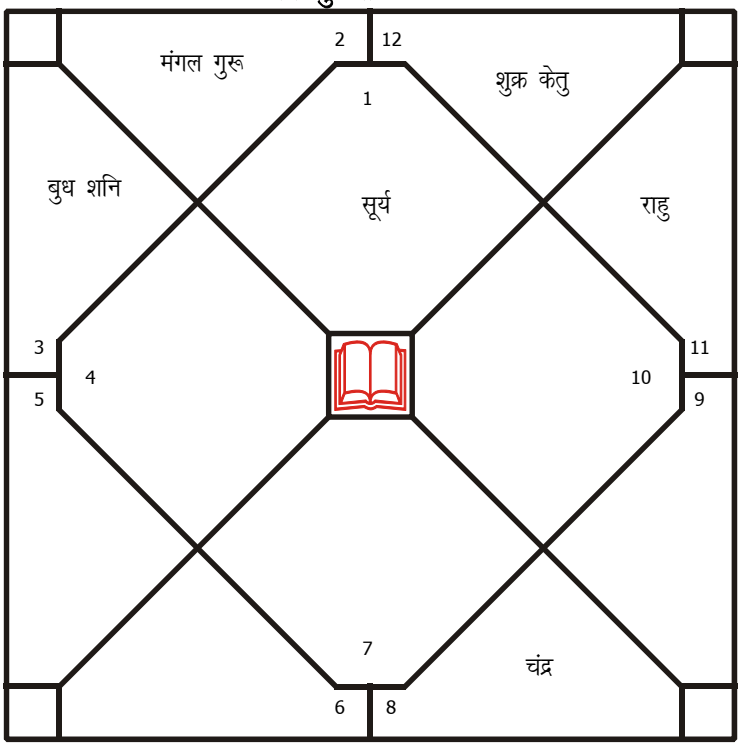

फलादेश

चंद्र

माता या शिक्षा में से एक का सुख होगा। किस्मत को जगाने वाला। ऊपर की आय हो। यदि चन्द्रमा-शुक्र की युति हो तो मिर्गी की बीमारी हो। छत के नीचे नल या कुआँ सन्तान के लिए हानिकारक। यदि जौहरी-सराफ या जुआरी हो तो बदकिस्मत होगा। खेती से संबंधित व्यापार आदि में हानि। चाल-चलन ठीक रखे। बुध खाना नं.2 तथा बृहस्पति खाना नं. 9 या 12 में हो तो माता-पिता दोनों की आयु लम्बी और चंद्रमा का प्रभाव उत्तम रहेगा। यदि जुआरी होगा या जौहरी होगा तो मंदा बुरा होगा।

उपायः

1. धर्म-स्थान (मन्दिर, गुरुद्वारा, चर्च, मस्जिद) में चने की दाल चढ़ाया करें।
2. पितृ कर्म श्राद्ध अवश्य करें।
3. बुढ़ी माता या स्त्री के पाँव छुकर उसका आशीर्वाद लें।
4. बड़ों के नाम पर दूध का दान करें।
5. जब राहु/केतु खाना नं.2 में हो तो सफेद काँच की बोतल में दूध भर जंगल में दबाऐं।
6. श्मशान भूमि के अहाते का पानी में चाँदी का चौरस टुकड़ा डालकर रखें।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

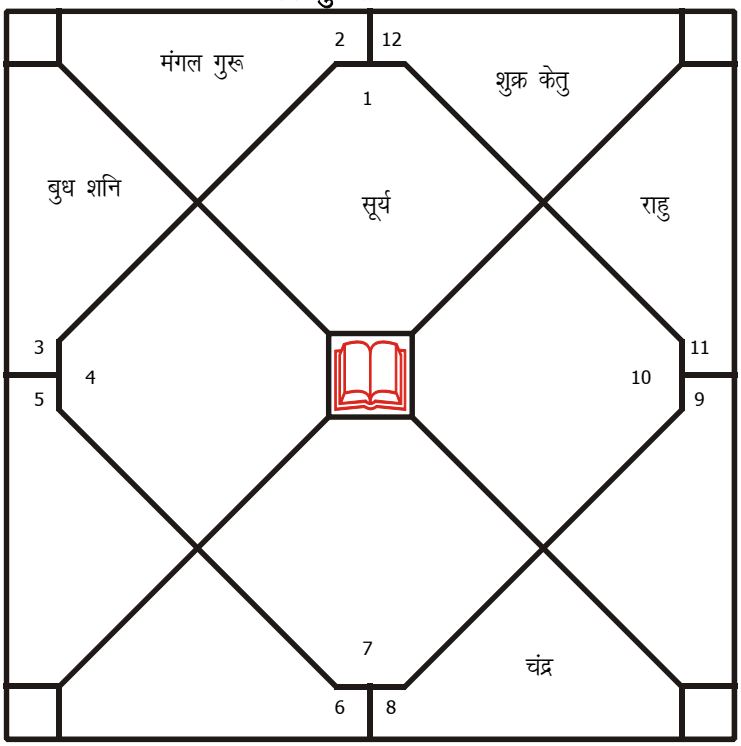

फलादेश

राहु

पिता की आयु तक धन अच्छा रहता है। भाई की गर्दन में कोई भी बीमारी हो सकती है। ताया निःसन्तान या लंगड़ा हो। जातक के कान खराब या बहरा होता है। राहु खाना नं. 11 में होने पर जब मंगल खाना नं.3 में हो तो भाई की गर्दन में कोई रोग, ताया लंगड़ा या संतान नहीं होगी। जातक की 11 मास या 11 वर्ष या 21 वर्ष की आयु में बृहस्पति की चीजों यानी पिता या घर के सोने पर भी बुरा असर पड़ेगा। जब केतु खाना नं. 5 में हो तो नर संतान कान, टांगों रीढ़ को हड्डी, पेशाव, पाँव, चोट, यात्र में हानि, मान, मामू खानदान से हानि हो सकती है। टांगों पर तिल होता है।

उपायः

1. दो नारियल तथा 4 किलो सिक्का (स्मंक) या 11 सिक्के 11 सप्ताह तक चलते पानी में प्रवाह करें।
2. बृहस्पति की वस्तुएं (सोना, केसर) एवं पिता अपने घर पर रखें।
3. शराब, मांस एवं अण्डे (शनि के मंदे कामों) आदि से सख्त परेहज करें।
4. बिजली का सामान किसी से मुफ्रत में न ले।
5. केसर का तिलक लगावे।
6. मंदिर में जाते रहना भी लाभदायक रहेगा।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com

वर्ष कुंडली - 2013

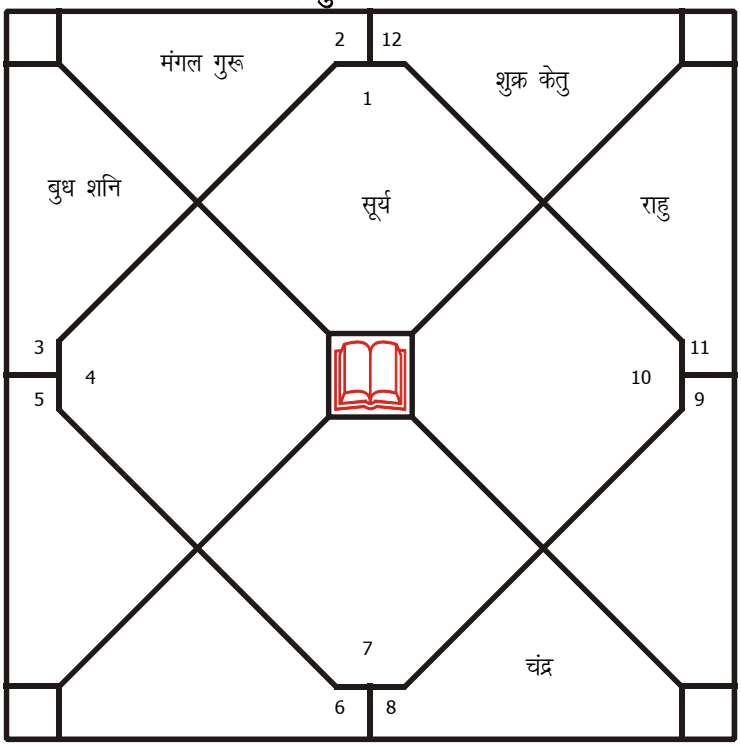

फलादेश

केतु

तरक्की की शर्त है तबदीली की नहीं। पहचान खाना नं. 2 के ग्रहों से होगी, बृहस्पति जैसा होगा, केतु का फल वैसा होगा। यदि 24 वें वर्ष नर सन्तान हो तो खूब धन आए। प्रायः पुत्रें के साथ मिलकर कार्य करने से लाभ होगा। अपनी संतान ही जातक को तारेगी। घर बनाना या यात्रओं से कारोबार शुभ फल देगा। शत्रुओं पर विजय पाने वाला जातक होगा। पावों पर तिल होता है। बृहस्पति के साथ केतु जातक में योग और आध्यात्मिक रूचि पैदा करता है। जब शनि, शुक्र और बृहस्पति का फल शुभ लेकिन बड़ा भाई या मामू आदि पर इनका प्रभाव कोई शुभ असर नहीं पड़ेगा।

उपायः

1. घर में दो रंग का कुत्ता (काला-सफेद) शुभ होगा
2. अंगूठा दूध में डालकर चूसना या अंगूठे का मुंह में रखना ग्रहस्थी संबंध में शुभ होगा।
3. कपिला (काली) गाय की सेवा करे।
4. दुनियावी 3 कुत्तों (दोहता-साला-भांजा) की सेवा करें।
5. गणेश जी की पूजा करे।
6. दहेज में सोने की अँगूठी ले।

COMPUTER MASTERS
A-34, Masjid Lane, Bhogal, New Delhi-110014
Mob: 7503309065, info@r3astroremedies.com. www.r3astroremedies.com